REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | NOVEMBER – 2017

# एक जमीन अपनी (चित्रा मुदगल) : विज्ञापन की दुनिया में फँसी नारियों की कहानी

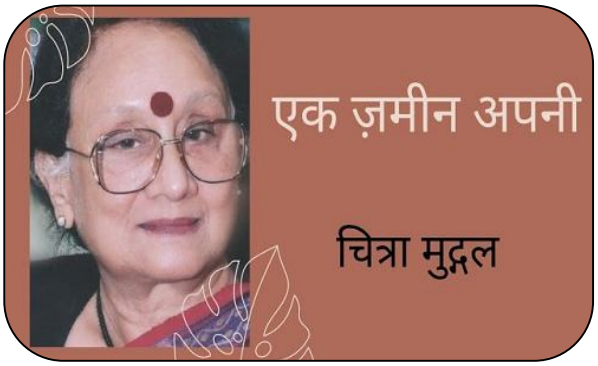


डॉ. गोविंद के. नंदाणिया
श्री एस. आर. भाभोर आर्ट्स कॉलेज,
सींगवड.

नारी अस्मिता एवं मानवीय विकास से जुड़े मसलों पर अपने रचनात्मक लेखन और सांस्कृतिक सहभागिता निभाने वाले लोगों में हिन्दी की जानी–मानी, चर्चित कथाकार चित्रा मुदगल का नाम ख्याति प्राप्त है । आज जबकि अधिकतर रचनाकार नगर, महानगर, अँचल, दलित लेखन से जुड़े हैं, वहाँ चित्रा जी की लेखनी में से सिर्फ नारी अस्मिता ही रेखांकित हुई है । दर असल उनका साहित्य मानवीय सरोकारों से गहराई से जुड़ा है । वह न केवल लेखन के क्षेत्र में बल्कि अपने सामाजिक, आर्थिक और मानवीय अधिकारों के लिए संघर्ष करनेवालें विभिन्न समुदायों विशेषकर स्त्रियों, श्रमिकों, दलितों और उपेक्षित बुर्जुगों के बीच रहकर उनके न्यायिक अधिकारों के लिए उन्होंने काम किया है । माता–पिता से मिली समाज सेवा ने उसे बनाया है । चित्रा जी बी. ए. द्वितीय वर्ष विनयन में थी तब से ही श्रमिक संगठनों के लिए कार्य करना प्रारंभ कर दिया था । वे आम नारियों के जागरण, श्रमिक यूनियन "कामगार अघाडी" स्याधार आदि संस्थाओं की सक्रिय कार्यकर्ता रही । चित्रा जी की सामाजिक उत्कर्ष की सेवाओं को ध्यान में रखते हुए कई प्रतिष्ठित विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है । कहने का तात्पर्य चित्रा जी का सामाजिक उत्थान का अनुभव उनके साहित्य में गहराई से उभरा है । अपनी चालिस–पैंतालिस सालों की रचना यात्रा में उन्होंने "आवाँ", "गिलिगडु" एवं "एक जमीन अपनी" जैसी कई महत्त्वपूर्ण कृतियों साहित्य जगत की अर्पित की है ।

1990 में प्रकाशित चित्रा जी का "एक जमीन अपनी" उपन्यास हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में एक ऐसी उपलब्धि है, जो समूची अनुजापन नारी को सोचने के लिए मजबूर कर देती है । विज्ञापन रंगीन चकाचौंध दुनिया में जितना हिस्सा पूँजी का है शायद उससे कम हिस्सेदारी स्त्री की नहीं है । इस नए सता प्रतिष्ठान में नारी अपनी देह और प्रकृति के माध्यम से बाजार के संदेश को ही उपभोक्ता तक नहीं पहुँचाती बल्कि इस उद्योग में पर्दे के पीछे एक बड़ी "बर्फ फोस" भी स्त्रियों से ही बनती है । चित्रा जी का "एक जमीन अपनी" उपन्यास आधुनिक विज्ञापन जगत की प्रतियोगिता और प्रकाश भरी विसंगतियों में पली स्त्रियों की चुप्पी को उतराधुनिक स्त्री समाज की विडंबनाओं के साथ चित्रित करता है । आलोच्य उपन्यास विज्ञापन संस्कृति के घातक कीटाणुओं के बीच संघर्ष कर रही दो युवतियों–अंकिता और नीता के माध्यम से नारी समानता के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को द्वंद्वात्मक रुप में रखकर स्वयं लेखिका की सोच अंकिता के माध्यम से व्यक्त हुई है ।

आलोच्य उपन्यास में कामकाजी औरत का विषय नया नहीं मगर इसका परिप्रेक्ष्य विज्ञापन जगत को बनाना बिलकुल नया प्रयास है । एक ओर विज्ञापन की रंगीन दुनिया में काम करनेवाली मध्यमवर्गीय नारी की विलक्षण अदाकारियों की चर्चा है, वहाँ दूसरी और उस व्यवसाय से झुड़ी नारियों के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न भी है । एक बात तो हम निश्चत रुप से कह सकते है कि चित्रा जी ने प्रस्तुत उपन्यास बड़ी लगन से लिखा है । उपन्यास लिखने के पीछे उनका एक निश्चित विजन है । विजन सिर्फ नारी मुक्ति ही है । विज्ञापन व्यवसाय से जुड़ी नारियों की स्थिति एवं प्रश्नों को

आधार बनाकर उपन्यास का कथानक गुंफित हुआ है ।

अंकिता उपन्यास की मुख्य पात्रा है । वे अपने–आपको एक सुरक्षित औरत मानती है किन्तु समाज में उसकी छबी पतिवक्ता है, अकेली है । उन्होंने सुधांशु से विवाह करके एक कडुवा घूँट पिया है । अंकिता अपने पति की एय्याशियों एवं ज्यादतियों का विरोध करती है । बदले में अपने "स्व" को खोना पड़ता है । आत्मसम्मान एवं आत्मबल की वजह से वह अपने आप सबकुछ प्राप्त करना चाहती है । लेकिन उसकी पत्नीत्व की उम्मीदे उजड़ जाती है । वह अपने ही घर में घुटन महसूस करती है । वह छटपटाती कहती है – "मैं घर को जीना चाहती हूँ, बरदाश्त करना नहीं ।"1 लेकिन पुरुष प्रधान समाज प्रस्तुत बात को ठुकराता है । अंकिता आधुनिक शिक्षा प्राप्त झुजारु लड़की है । वे अपनी अस्मिता, अस्तित्व एवं स्वाभिमान की रक्षा हेतु समर्थ बनती पुरुष बल का सामना करती है । एक नारी होकर सामना भी कितना करे अंततः वह थक जाती है । नर पिचास भारतीय पुरुष प्रधान समाज अंकिता के "स्व" को हिन्दी चिन्दी करके कुडेदान में फेंक देता है । वर्तमान परिवार एवं विवाह जैसी सामाजिक समस्याएँ नारी को एवं उसकी स्वतंत्रता को निगल ने में कामयाब हो रही है । थीचे गये परंपरागत विवाह जैसे बंधनों में चंद दिनों के पश्चात् पत्नी और पति के बीच दरारे पड़ती है । नगर, महानगर में बसनेवाली एवं पढ़ी लिखी लड़कियों में आज कल प्रतिभा का जोरदार विकास हो रहा है । वे पुरुषों के बराबर ही नहीं बल्कि उनसे आगे जा रही है । आज वे न केवल डोकटर, इंजीनियर, अध्यापक बन रही है, बल्कि हवाई जहाज, रेलगाड़ी भी चला रही है । चाहे खेल मैदान हो या राजनीति लड़कियाँ सब जगह मौजूद है । अंकिता में भी प्रस्तुत बातें सहज रुप में उभरी है । इसलिए वे सुधांशु के प्रश्न का उतर देती कहती है कि "यह मेरा घर हैं... यहाँ तख्ती किसी भी बात को बर्दाश्त रना उसे कबूल नहीं है । वह एक निश्चित ध्येय को लेकर ही उपन्यास में अवतरित हुई है । एक ही छत के नीचे दोहरी मानसिकता में जीना या निष्कासित रहना उसके लिए आत्मबंधना है । अंकिता नारी सहज समस्याओं की खोज के लिए गहन चिंतन करती है । पति से संबंध विच्छेद कर अंकिता स्त्रीत्व की पूर्णता के भ्रम से मुक्त हो जाती है । अंकिता सात्विक मानसिकता प्राप्त नारी है । अपनी जिन्दगी में आये भयानक उतार–चढ़ावों को वह धैर्य से पता लेती है । उनमें नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं है । वह अपने पति से पंतिशोध लेना चाहती, तो आशानी से ले सकती थी किन्तु उनमें प्रतिशोध की भावना बिलकुल नहीं है । अपने आप अकेली संघर्ष करती वह अपनी एक अलग हैसियत एवं पहचान बनाना चाहती है ।

आलोच्य उपन्यास में अंकिता की उपलब्धियाँ अंजूरी भर मात्र है लेकिन वह अपनी बनी बनाई है । पराधिन रहकर जीना उसे नहीं भाता । वह अपने पैरों नीचे अपनी ही जमीन चाहती है । मित्र हरीन्द्र के अनुसार अंकिता "साधारण औरत" नहीं है, जो ताने तुक्के बातें करती रहती है । वह स्वाश्रयी है । वह नीता से बात करती कड़े शब्दों में कहती है कि "तुम्हारा, स्त्री समानता का दृष्टिकोण मर्द बनना है... मर्दो की भाँति रहना... वे समस्त आचार–व्यवहार, व्यवस्थाएँ अपनाना... यही समानता का दृष्टिकोण है ? स्त्री को समाज में समान अधिकारों के नाम पर इन्हीं उच्छृंखलताओं और अनुशासनहीनता की चाह है ? प्रश्न उठता है नीत... जब ये अध्यय स्थाएँ मर्दो के लिए नैतिक अमानवीय दुराचरण और निरंकुशताएँ हैं तो स्त्री के लिए उचित कैसे हो सकती है ?"3 अंकिता चित्रा जी के मन मस्तिष्क में पड़ी नारी सहज भावना का प्रतिरुप है । चित्रा जी स्वयं चाहती है कि भारतीय नारी स्वाभिमानी, स्वाश्रयी एवं काबिल बने । वह अपने पैरों नीचे अपनी जमीन की तलाश करे । अंकिता में लेखिका की अपनी सोच है । उपन्यास के अंत में पति सुधांशु के पुनः बुलाने पर वह कह देती है – "जीवन की कठिनाइयों को उसने अपने आप सुलझा लिया है और अपने पैरों पर खड़ी हो गई है । तभी दूसरी बार पुरुष रक्षाधिकारी बनकर उसके आगे पहुँच गया है । इसलिए वह आत्मसम्मान की बात कहती है – "सुधांशु जी, औरत बोनसाई का पौधा नहीं है ... जब जी चाहा, उसकी जड़े काटकर उसे वापस गमले में रोप लिया... वह बौना बनाए रखने की इस साजिश को अस्वीकार भी तो कर सकती है ।"4 यहाँ अंकिता सिर्फ अपने होने का अहसास करती है ।

दूसरी ओर अंकिता की सहेली नीता है, जो खुले आसमान में आजाद पंछी के समान विचरण करती रहती है । एक सुन्दर युवती होने के कारण जीता अच्छा खासा मोडल बनना चाहती है विज्ञापन तथा विचरण की प्रतियोगिता भर जगत में वह घोंसला छोड नए–नए स्थानों की खोज में हमेशा भटकती रहती है । स्वतंत्र एवं स्वच्छंद मानसिकता की धनी जीता अन्य स्त्रियों की तुलना में बिलकुल भिन्न सोचती है । उसका जीवन दर्शन है – "एक बार अपनी तरह से रहने की आदत पड़ जाय तो दूसरों की आदतों में जीना घुटन बन जाता

है... चोह वह उसकी माँ ही क्यों न हो ।"प एक ओर अंकिता मर्यादावान युवती है वहाँ दुसरी ओर नीता एक बोल्ड लड़की है । अंकिता की दृष्टि में नीता बिदांस है । अपना बिदासपन जीवन नीता को भाता है, किन्तु समाज उसे बुरी ओर गिरी युवती के रुप में ही मानता है । तिलक की नजर में नीता "उसकी एक रात की कीमत है ओबेराय का डिनर, स्टूडियो 210 की रंगीन शाम, तेजपाल का आखिरी शो या खंडाला की आउटिंग.।" मि. गुहा, सक्सेना और न जाने कितनों से संबंधों के प्रवाह ओढ़ती हुई नीता ने "माडल" के रुप में अपनी जगह बनाई । वह अपनी बुद्धि और प्रतिभा को ग्लैमर की दुनिया में बेचती है । नीता के अनुसार सती–साध्वी कर्ज पर जीने का उतना अर्थ नहीं जितना अंकिता सोच बैठी है । नीता अपनी हरकोई चीज़ को बेचकर सामाजिक सीमाओं का अतिक्रमण करके सबकुछ पा लेना चाहती है । हमे लगता है नीता में "रेडियल" सोच है, जो भव्यि में नारी समाज के लिए खतरे से खाली नहीं है । वह देश काल संदर्भ को नहीं, अपनी व्यावहारिकता और प्रयोगशीलता को साबित करने की कोशिष करती है । आदर्श, नीति, मर्यादा के वस्त्रों को चिथड़े हाल करती वह सुधीर को समर्णित होती है । किन्तु जैसा की सुधीर की पत्नी ने कहा था, वह सुधीर के लिए महज एक "फिल्म" थी, जिसे वह कुछ दिन तक ओढ़ता–बिछाता रहा । अपने किए कर्मों पर चिंतित होती विवाह की अनिवार्यता को स्वीकार नहीं करती वह कहती है –"मैं सवाल ठीक से नहीं हल कर पाई, इससे गणित गलत नहीं हो जाता। सुधीर की उपेक्षा से हुआ मोहभंग उसके महत्त्वाकांक्षी मन को गहरे पराजय बोध से भर देता है। अंततः वह अपनी बच्ची मानसी को अंकिता के हाथों सौप कर इस दुनिया से हंमेशा के लिए विदा हो जाती है। खुदकुशी के लिए उसकी आत्म ग्लानी काफी थी "मैंने मूल्य तोड़े थे । "स्वयं अपनी गलती स्वीकार करती अपनी वसियत में अपनी नन्ही बेटी मानसी को अंकिता की ममतामयी गोद में छोड़ जाती है । यहाँ एक बात स्पष्ट हो जाती है कि मीता का स्वेराचार टूटना और मर जाना अंतिम परिणितों को अंकिता की ममतामयी गोद में छोड़ जाती है । यहाँ मुल्य और संस्कृति के सामान्य दर्शनों पर सवाल है । नीता के अंतिम संवाद हमे संकेत देते है कि वह अंततः अंकिता के विचारों और उसकी जीवन पद्धति की सार्थकता से सहमत हो जाती है।

निसंदेह हम कह सकते है कि चित्रा जी का आलोच्य उपन्यास हिन्दी का पहला ऐसा उपन्यास है, जो विज्ञापन संस्कृति की शक्ति एवं विसंगतियों पर विस्तार से प्रकाश डालता है । दो स्त्रियाँ अपनी अलग–अलग पहचान लिए उपन्यास में प्रस्तुत हुई है। एक तरफ आत्मनिर्भर। उपेक्षित है मगर स्वाभिमानी। अपने को भुलकर, सामाजिक डर में डूबकर मृत्यु तुल्य जोना उसे पसंद नहीं है।

उपन्यास की अधिक्तर कथा अंकिता को हासिये में रखती है । वह अपने सम्मान एवं गौरव के लिए हर हंमेश तड़पती रहती है । उसे अपने सतीत्व के लिए अग्नि परीक्षा सहनी पड़ती है । दूसरी ओर नीता स्वच्छंदता स्वतंत्रता के विचारों से फलस्वरुप सामाजिक दायरे से बहिष्कृत होती है । मर्द जैसा व्यवहार उसे कही की नहीं रहने दता । चित्रा की का पूर्णतया मानना है कि स्त्री की स्त्रीत्व से मुक्ति नहीं, बल्कि पुरुष प्रधान समाज की पुरुष मानसिकता से लड़ना होगा । मान, सम्मान, आदर्श नारी मर्यादा के आभूषण है उसे हर हंमेश हरेक नारी को सुरक्षित रखना होगा । यही सारे संकेतों के मूल में ही "एक जमीन अपनी" उपन्यास का कथानक गंथा गया है ।

## संदर्भ :

(1) एक जमीन अपनी : चित्रा मुद्गल, पृ. 18
(2) एक जमीन अपनी : चित्रा मुद्गल, पृ. 99
(3) एक जमीन अपनी : चित्रा मुद्गल, पृ. 120
(4) एक जमीन अपनी : चित्रा मुद्गल, पृ. 220
(5) एक जमीन अपनी : चित्रा मुद्गल, पृ. 24

**डॉ. गोविंद के. नंदाणिया**
**श्री एस. आर. भाभोर आर्ट्स कॉलेज,सींगवड.**